

श्रीगुरु गणपतयनमः ॥ श्रीरामायनमः ॥ जयजय आचार्या ॥ समस्त सुरवर्चा ॥ प्रसा प्रभा त
सूर्या ॥ सुखोदया ॥ १ ॥ जय सर्ववि सावया ॥ सोहभावसुहावया ॥ नानाकोकेहलावया ॥ समुद्रांतु ॥ २ ॥
अैकेगा आर्तबंधू ॥ निरंतर करुणसिंधू ॥ विषदविद्यावधु ॥ लभाजी ॥ ३ ॥ तुजया प्रतिपत्तैसि ॥ तया ज
गहेदाविसि ॥ प्रकटतै करिसि ॥ आघवेचितु ॥ ४ ॥ किपुठिताचिदृष्टिचोरिजे ॥ हादृष्टिवेधुनिफुजे ॥
परिनवलता घवतुसे ॥ जे आपणेपचोर ॥ ५ ॥ जेतुचितुसर्वायया ॥ माकोणाबोधुकोणामाया ॥ अ
सया आपे आपला घमिया ॥ नेमोतुज ॥ ६ ॥ जाणोजगि आपवोके ॥ तेतुसिया बोले सुरसजाते ॥ तु
सेनिक्षमत्वआले ॥ श्रुध्वेयेसि ॥ ७ ॥ रविचंद्रादीकमुक्ति ॥ उदोकरितित्रिजगती ॥ तेतुसिया दिसी
तेजतेजा ॥ ८ ॥ चकवळिजेअनिके ॥ तैदैविकेनिजीनिजबके ॥ अभतुजमाजिखेके ॥ लपिथपि ॥ ९ ॥
किंबहुनामायाअसोस ॥ हानजीतुसेनिडोकस ॥ असोवानेणेसायास ॥ श्रुतीसीजि ॥ १० ॥ वेदकानू
नितवचांग ॥ जवनदिसेतुसेअंग ॥ मगआह्यातयामुग ॥ येकिपांति ॥ ११ ॥ जिचेकार्णवाचायाधि

पाहाता येवाचा पाडुनाहि ॥ मामहानदिकाइ ॥ ज्ञाणी जति ॥ १२ ॥ का उदै लया भास्वतु ॥ चंद्रजै साख
 द्यातु ॥ आह्माश्रुति तु जआंतु ॥ ते तु का पाडु ॥ १३ ॥ आणि दुजिया थां उमोडे ॥ तेथ परे सिवै खरिबु
 डे ॥ तो तु मां कोणे तोडं ॥ वाना वासि ॥ १४ ॥ या का गि आता ॥ स्तूति सां इनि निवांता ॥ चरणि टे विजे
 माथा हेचि भले ॥ १५ ॥ तरितु जै सा आहासि तै सया ॥ नमोजी श्रीगुराया ॥ मज ग्रंथो द्यमु फुमा
 वया ॥ वे हारा हो ॥ १६ ॥ आता लपा भा उवल सो डि ॥ भरिमति माक्षी पोत डि ॥ करि हान पद्य जो डि ॥
 थो रा माते ॥ १७ ॥ मग मी संसेरने तेणे ॥ करीन संतासि कर्ण भूषणे ॥ लेववीन सुलक्षणे ॥ विवेकाचि ॥ १८ ॥
 जिगीतार्थ निधान ॥ काठु माझे मन ॥ सुयि श्रु हो जन ॥ आपुले तू ॥ १९ ॥ हे वाग सुष्टिये के वे के ॥ रे
 खतु माझे बुद्धि चेडो के ॥ तै सा उदे जो जी निर्मळ ॥ काश्यपि विवे ॥ २० ॥ माक्षी प्रहावे दिवे लहाळ ॥ का
 ये हो य सुफळ ॥ तो वसंतु हो इस्व हाळ ॥ शिरो मणी ॥ २१ ॥ प्रमय महापुर ॥ हे मति गंगाय थोर ॥ तै सा
 वरिषे उदार ॥ दिष्टिवे नि ॥ २२ ॥ अग विषै क धामा ॥ तु सा प्रसाश्चंद्र मा ॥ कश्मज पूर्णिमा ॥ सुर्तिची जी ॥ २३ ॥

जिअवलोकि लियामोते ॥ ३ ॥ न्मेखसागरी भरिते ॥ बोसंडेलसुतीति ॥ रंस रतीचे ॥ २४ ॥ तवतोवोनि
 श्रीगुरराजे ॥ सणितेले विनंतिव्याजे ॥ मांडिलेदस्वादुजे ॥ खवनमिसे ॥ २५ ॥ हेअसोधातावाजग ॥
 तोतानार्थकरुनिगोमटा ॥ ग्रंथदावीउकंटा ॥ भंगोनेदि ॥ २६ ॥ हाकाजीस्यामी ॥ हेचिपाहातहोतो
 मी ॥ जेश्रीमुखे सणातुली ॥ ग्रंथुसांगे ॥ २७ ॥ सहजिदुर्वचाहिस् ॥ आंगेचितवअमस् ॥ वरिआ
 ट्कापुर ॥ पियुषाचा ॥ २८ ॥ तरिआतायेणेप्रसादे ॥ विन्यासेविदग्दे ॥ मूळशास्त्रपदे ॥ वाखाणिन ॥ २९ ॥
 परिजिवाआंतुलि कडे ॥ जैसिसंदेहाचिडोणिबुडे ॥ नाश्रवणितरिचाडे ॥ वाडदिसे ॥ ३० ॥ तैसीबोलि
 साचारि ॥ अवतरोमासीमाधुरि ॥ माळेमांगनिघरि ॥ गुररूपेचा ॥ ३१ ॥ तरिमागाभयोदशि ॥ अ
 ध्यायिगोअैसि ॥ श्रीरुहअर्जुनेसि ॥ चावकेले ॥ ३२ ॥ जेक्षेत्रक्षेत्रज्ञयोग ॥ होइजेयेणेजगे ॥ आसा
 गुणसंगे ॥ संसारिया ॥ ३३ ॥ आणिहाचिप्रहतिगतु ॥ सुखदुःखभोगीहेतु ॥ अथवागुणानितुक्व
 कुहा ॥ ३४ ॥ तरिकैसापाअसंगसंगु ॥ कोणतोक्षेत्रक्षेत्रज्ञयोग ॥ सुखदुःखादिभोगु ॥ केवितया ॥ ३५ ॥

रि

२

गुणतेकैसे किति ॥ बांधतिकवणरिती ॥ नातरिगुणातिती ॥ चिकुका ॥ ३६ ॥ एवंयया अद्यवया ॥
 अर्धारूपकरावया ॥ वियोये थचौदा विया ॥ अध्यायासि ॥ ३७ ॥ तरितोआताठैसा ॥ प्रस्कृतप
 रियसा ॥ अभि प्रावोविश्वशा ॥ वैकुण्ठिचा ॥ ३८ ॥ श्लोक ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ परंभूयः प्रवक्ष्या
 मिज्ञानानांज्ञानमुत्तमं ॥ यस्त्यातामुनयः सर्वपरांसिद्धिमितोगताः ॥ १ ॥ रिक्ता ॥ तोस्रणे
 गाअर्जुना ॥ अवधानाचिसर्वसेना ॥ मिमौनिययाज्ञाना ॥ श्लोकावेहो ॥ ३९ ॥ आह्वीमाग्नतुजब
 हुति ॥ हाविलिहे उपपति ॥ परिअसृणिप्रतिती ॥ कुसिननिगे ॥ ४० ॥ स्रणोनिपैपुउति ॥ सांघिजैत
 प्रतिपति ॥ परिस्रणस्रणोश्रुती ॥ डाहारिलेज ॥ ४१ ॥ यकवीज्ञानाहेआपुले ॥ परिपरतेसेनिजाते ॥
 जेआवडोनिघेतले ॥ भवस्वर्गादि ॥ ४२ ॥ अगायाचिकारणे ॥ हेउत्तमसर्वापरिमीस्रणे ॥ जेवकि
 हेस्रणे ॥ येरज्ञाने ॥ ४३ ॥ जियेभवस्वर्गातेजाणती ॥ यागचिचोंगस्रणति ॥ पारिस्कीपुडिआथी ॥
 भेदिजया ॥ ४४ ॥ तियेआघवीचिज्ञाने ॥ केदियेणे स्वप्ने ॥ जैशावातोर्मिगगेने ॥ गिळिजतिअंति ॥ ४५ ॥

३

का उदिते रस्मिरो जे ॥ लोपति चंद्रादिते जे ॥ नाना प्रकृत्यां बुभाजे ॥ नदि नद ॥ ४६ ॥ तैसे हे येणे पा
हालया ॥ क्षान जात जाय लया ॥ अणो निधुं नं जया ॥ उत्तमहे ॥ ४७ ॥ अनादि जे सुकता ॥ आपुति असे
पांडु सुता ॥ तो मोक्षु हाता येता ॥ होय येणे ॥ ४८ ॥ जया चया प्रतिती ॥ विचार विरिसम स्ती ॥ नेदि जे चिसं
मृति ॥ माथा उधुं ॥ ४९ ॥ मने मूना घालु निमागे ॥ विश्रान्ति जातिया आंगे ॥ ते देहि देहा जोगे ॥ हो
ती चिना ॥ ५० ॥ मग ते देहाचे वेळे ॥ बोल्ला इ नये केचि वेळे ॥ समतु क्रिकोगे ॥ मासे जाले ॥ ५१ ॥
श्लोक ॥ इदं क्षानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः ॥ सर्गेपिनोपजायंते प्रकयेन व्यथं निच ॥ २ ॥
टिका ॥ जे मासिया नित्यता ॥ तेणे नित्यते पांडु सुता ॥ परि पूर्ण पूर्णता ॥ मासिया चि ॥ ५२ ॥ मी जैसा
अनंताने दु ॥ जैसा चिसत्य सिंधु ॥ तैसे चिते भेदु ॥ उरचिना ॥ ५३ ॥ जेमि जे वेळ जैसे ॥ ते चिते जाले तै
से ॥ घटभंगी घटाकारो ॥ आकार जे वि ॥ ५४ ॥ ना तरि दिवा मुळि कि ॥ दीपशिखा अने कि ॥ मि न लया
अवतो कि ॥ जैसे होये ॥ ५५ ॥ अर्जुनातया परि ॥ सरलि दे ताचि वारि ॥ मोदो नामार्थचे काहारि ॥ मी

३

तू विण ॥५६॥ येणेचिपै कारणे ॥ जै पहिले ऋद्धिचे जुं पणे ॥ तै हीत या हाणे ॥ पडे चि ना ॥५७॥ ऋद्धि
 चिये सर्वादि ॥ जयादे हा चि ना हि बांधि ॥ तै कैचे प्रळयावधि ॥ निमतिलपा ॥५८॥ ह्युणो निजन्म
 क्षया ॥ अतीत तधनं जया ॥ मिजा ले ज्ञानायया ॥ अनुसरोनि ॥५९॥ अैसे ज्ञानाचि गाछी ॥ वानि
 लिदेवे आं वडि ॥ ते कीचि पार्था ही गोडि ॥ द्वा वावे या ॥६०॥ तवतया जाले आन ॥ सर्वा गीनि घाले कान
 सपाइ अवधान ॥ आतलापा ॥६१॥ आतादे वाचेया अैसे ॥ जाकळि जतु असे वोरसे ॥ ह्युणो नि निरो
 पण आकारा ॥ वेगने ना ॥६२॥ अग ह्युणे गा प्रज्ञा कांता ॥ उजवलि आजिव कृत्वता ॥ जे बोला येवळ
 आता ॥ जोडलासि ॥६३॥ तरिये कुमी अने कि ॥ गोविजे दह धारा किं ॥ त्रिगुणी लु बु धकि ॥ कोण परि ॥६४॥
 कैसा क्षेत्र योगे ॥ विये दय जगे ॥ ते परि ससांगे ॥ कोणे परि ॥६५॥ पैक्ष भयणे व्याजे ॥ हेया ला गि बो लिजे
 जेमसंग विजे ॥ भुति पि के ॥६६॥ **श्लोक ॥ ममयो निर्महद्वस्य तस्मिन् गर्भे दधाम्यहे ॥ संभवः स**
र्व भूतानां ततो भवति भारत ॥३॥ टिका ॥ येहू कीतहि महद्वस्य ॥ सात्मा गि हे अैसे नाम ॥ जेमह

दादिविश्राम ॥ शालिकाहो ॥ ६७ ॥ विकाराबहुवसथोरि ॥ अर्जुनोहचिकरि ॥ स्रणो नि अवधारि ॥ मरु
 ब्रह्म ॥ ६८ ॥ अव्यक्तवारमति ॥ अव्यक्तैसिवदंति ॥ सांख्याचियाप्रतिति ॥ प्रह्लरुचि ॥ ६९ ॥ वेदांति ह्ये
 तेमाया ॥ अैसे ह्यणतिप्रज्ञाराया ॥ असाकितिवोकोवाया ॥ अज्ञानहो ॥ ७० ॥ आपुला आपणपया ॥
 विसरुजोधनंजया ॥ त्तचिरूपयया ॥ अज्ञानासी ॥ ७१ ॥ आणीक हियेकअसे ॥ जेविचारोवेठे नदिसे
 वातिपाहाताजैसे ॥ आंधोरका ॥ ७२ ॥ हातविलयाजाये ॥ निश्च्युतिरिलोये ॥ दुधीजैसिसाये ॥
 दुधाचिते ॥ ७३ ॥ वैजागरुनास्वप्न ॥ नास्वरूपअवस्थान ॥ तेसुषुप्तीकाघन ॥ जैसिलोये ॥ ७४ ॥
 कानवियतावायूते ॥ वासेआकाशरिते ॥ तथाअैसेनिरुते ॥ अज्ञानग ॥ ७५ ॥ वैलखांबुकापुरुषु
 अैसाविश्वयोनाहियेकु ॥ परिकायिनेणाभावलाकु ॥ दिसतसे ॥ ७६ ॥ तेविवस्त्रजैसेअसे ॥ तैसेकीर
 नदिसे ॥ परिकाहिअनारिसे ॥ हेखिजेना ॥ ७७ ॥ नारातिनातेज ॥ तेसंधीजेविसांज ॥ तेविविस्त्रुनानि
 ज ॥ अज्ञानआधी ॥ ७८ ॥ अैसेकोणियेकिदशा ॥ तिथेवाजुअज्ञानदेसा ॥ तथागुंठाअलयाप्रकाश

ति

क्षेत्रज्ञना व ॥ ७९ ॥ अज्ञान थोरिये आणि जे ॥ आपण पतरिने णिजे ॥ ते रूप जाणिजे क्षेत्रज्ञाचे ॥ ८० ॥
 हाचि उभययोगु ॥ बुद्धे वा पाचांगु ॥ सत्तेचानै सर्गु ॥ स्वभावो हा ॥ ८१ ॥ आता अज्ञाना सारिखे ॥ वस्तु
 आपण पचे दिखे ॥ परि रूप अनेक ॥ ने णो कोण ॥ ८२ ॥ जै सारं कुभ्रमला ॥ प्रणे जा रे मी रागो आला ॥ का
 मु छी तुगेला ॥ स्वर्ग लोका ॥ ८३ ॥ ते वित्त चक लिया दियी ॥ मगेदु खेणे जे जे उयी ॥ तया नाव मृष्टी ॥ मीधि
 पै गाविये ॥ ८४ ॥ जै से या स्व म मोहा ॥ तो ये का कि दे खिजे बहु वा ॥ तोचि पांडु आत्मया ॥ स्मरणे विण असे ॥ ८५ ॥
 हेचि आनि भ्रंति ॥ प्रमय उपलौ पु उति ॥ परितु प्रति ति ॥ याची घे पा ॥ ८६ ॥ तरि मा सी हे गृ हणी ॥ अ
 नादित रूणि ॥ अनिर्वाच्य गुणि ॥ अविद्या हे ॥ ८७ ॥ इये नाहि हेचि रूप ॥ ठाणे हे अति उम पा ॥ हे निद्रिता
 समीप ॥ चेतादुरि ॥ ८८ ॥ पै मासे नीचि आंगे ॥ पौ ७ ॥ त्या हे जागे ॥ आणि सत्ता संभोगे ॥ गुकीणि होये ॥ ८९ ॥
 महद्ब्रह्मा उद रि ॥ प्रकृति आट विकारि ॥ गर्भाचि करि पेलोवेली ॥ ९० ॥ उभयसंगु पहिले ॥ बुद्धि त्व प्र
 सवते ॥ बुद्धि तत्व उभारैले ॥ होय मन ॥ ९१ ॥ तरुणि ममता मनाचि ॥ अहंकार तत्परचि ॥ तेणे महा भु

ताचि ॥ अभिव्यक्ती होय ॥ ९२ ॥ आनिविषया इंद्रियांगोसि ॥ स्वभावे तव भुतासि ॥ खणो नियेति स
रिसी ॥ ति ये हि रूपा ॥ ९३ ॥ जाले निविकारक्षोभे ॥ पाटि त्रिगुणाचे हि उभे ॥ ते काये वासना गर्भे ॥ दोषद
वा ॥ ९४ ॥ रखाचा आवाका ॥ जैसि बीजकणिका ॥ जीवि बांधे उदका ॥ अटत खेवो ॥ ९५ ॥ तैसि मासे नि संगे
अविया नाना जगे ॥ आरघे वा लगे ॥ आणियाचि ॥ ९६ ॥ मग गर्भजो कातया ॥ तैसरूपक ये आया ॥ तप
रिये सराया ॥ सुजनाचिया ॥ ९७ ॥ पै मणिज स्वदज ॥ उद्धिज जा रज ॥ उमट तिस हज ॥ आवे वहे ॥ ९८ ॥
व्योम वायु वसे ॥ वाटले नि गर्भरसे ॥ मणि जु उ ससे ॥ अवे उता ॥ ९९ ॥ पो टिसू नित मरजे ॥ आग ठिका तो य
तेजे ॥ उरता नि फेजे ॥ स्वदजुगा ॥ १०० ॥ आप ए ध्वी उकटे ॥ आणित मो मात्रे ॥ नि रुके स्थावर उमटे
उद्धि जु हा ॥ १०१ ॥ पाचाप चहि विरजी ॥ होतो मन बुध्यादि साजी ॥ हे हे तु जा रजी ॥ असे जाया ॥ १०२ ॥ हे से
च्या ही हे सरका ॥ करचरणतक ॥ महा प्रद्युति स्फूक ॥ ते विशि ॥ ३ ॥ प्ररति पेलते पोटा ॥ निरुत्तिते
पाटि निट ॥ सुरयोनी आंगे आटा ॥ उ धर्मीचि ॥ १०३ ॥ कंठ उक्तासता स्वर्गु ॥ मृत्तु लो कु मध्य भागु ॥ अधो

५
 दरा चोगु ॥ नितंबुता ॥ ५ ॥ हे सेले करयेक ॥ प्रसवलि हे देख ॥ जयोचेति न्हिलोक ॥ बाळसेगा ॥ ६ ॥ चो यासी
 तक्षयोनि ॥ ते कांडोपे रासां दणी ॥ बोटे प्रतिदिनी ॥ बाळकेहे ॥ ७ ॥ नानोदह भवेवि ॥ नामाचि ले णि ॥
 लेववि ॥ मोहस्तेने वाठवी ॥ निचनेवन ॥ ८ ॥ सृष्टिवेगळेवेगळिया ॥ तयाकरागीं भांगोळिया ॥ भिन्ना
 भिनसुक्ष्मिया ॥ मुदियातेथ ॥ ९ ॥ हेरुळौत चराचर ॥ अविचारितसुंदर ॥ प्रसवोनिथोर ॥ थोरावलि
 ११० ॥ पै ब्रह्मा प्रातः काळु ॥ विद्युत्तो माध्याह्ने वेळु ॥ सराशिवसांजवेळु ॥ वाळायया ॥ ११ ॥ महाप्रक्य
 सेजे ॥ खेळनि आलेनि देजे ॥ विषमज्ञाने उपजे ॥ क्लेशादये ॥ १२ ॥ अर्जुनायापरि ॥ मिथ्यादृष्टिचाघरि ॥
 युगानुरनिची करि ॥ चो जपाउले ॥ १३ ॥ **स्लोकः ॥ सर्वयोनिषु कौं ते यमूर्तयः संभवतियाः ॥ तासां**
ब्रह्म महयोनिरहं बीजप्रदः पिता ॥ ४ ॥ रिका ॥ संकल्पययाचा इच्छु ॥ अहं कारविनदु ॥ औसिया
होय ते सेवटु ॥ ज्ञानेयया ॥ ५ ॥ आता असो हे बहु बोळि ॥ औसेविश्वमायावियाळि ॥ यथ साह्यजा
ळि ॥ मासीसता ॥ १५ ॥ या कारणे मी पिता ॥ महद्ब्रह्ममाता ॥ आपत्यपांडुसुता ॥ जगंडवसु ॥ ६ ॥

आतारारिरे बहुते ॥ देखोनि भेदे होचिते ॥ जे मन बुध्यादि भूते ॥ येके चिह १७ ॥ पै उचा निचा डाहा
ळिया ॥ विषमो वेग का लिया ॥ येका चिजे विजा लिया ॥ विजा चिया १८ ॥ आणिसंमंधुतो हि औसा ॥
मृत्तिके घटुते कुजैसा ॥ कापटुत कापुसा ॥ नातु होये १९ ॥ आना कट्टोळ पेरं परा ॥ संत तीजै सि सागरा
आद्या आणि चराचरा ॥ संमंधुतैसा २० ॥ खणो निवळि आणि ज्वाळ ॥ दोळि वही चिके वळ ॥ ते
विमीगा सकळ ॥ संमंधुवावो २१ ॥ जाळे निजगे मी साके ॥ तरि जगते कोण फोके ॥ किले वरि माणिके ॥
लोपिले कायि २२ ॥ अबंकारा आले ॥ तरि सोने पण कायि गेले ॥ कि कमळ फाकले ॥ कमळ ता मुके २३ ॥
संग पाधने जया ॥ आवे वि आवे विया ॥ आद्यादि जे कितया ॥ ते चिरूप २४ ॥ विसृ ल्मा जो न्ह का ॥
कणिसाचा निर्वी का ॥ वेचला की आग का ॥ दिसतसे २५ ॥ खणो निजग परोते ॥ सासुनि पाहिजे ॥
प्राते ॥ तैसाने कु उखिते ॥ आवे वचिमी २६ ॥ हातुसाचो कारा ॥ निश्याचा खरा ॥ गाठी बांधविरा
जिवा चिये २७ ॥ आता मीया मज दाविला ॥ शरीर वेगळाला ॥ गुणी मीचि बांधला ॥ औसा आवेडो २८ ॥

ह

जैसे स्वप्नी आपण ॥ ३३ ॥ अनिया आत्म मरण ॥ भोगिजे गाजाण ॥ कपि ध्वजा ॥ ३१ ॥ काक वडोते डोके
 प्रकाशुनि पिबेके ॥ देखतिते हि केके ॥ सयासिचि ॥ ३२ ॥ नाना सूर्य प्रकाशे ॥ प्रकटिते आभ्र भासे ॥ तो
 तोपलाहे हि दिसे ॥ सूर्यचिकि ॥ ३३ ॥ सै आपण पेन जा लिया ॥ द्याया गा उमा पु लिया ॥ विहूनि विहाले
 या ॥ धान आहे ॥ ३४ ॥ तै सी द्ये नाना देहे ॥ हा उनि मी नाना होये ॥ यथु अैसा बंधु आहे ॥ ते हि दे रेवे ॥ ३५ ॥
 बंधु का न बंधिजे ॥ हे जाणणे मज माझे ॥ नेणणे नि उपजे ॥ आपुले नि ॥ ३६ ॥ श्लोक ॥ सतरंज
 स्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः ॥ निबध्नति महाबाहो देहे देहि नमव्ययं ॥ ५ ॥ टिका ॥
 तरिकोणे गुणे कैसा ॥ प्रजचिमि बंधु अैसा ॥ आवडेते परियसा ॥ अर्जुन देवा ॥ ३५ ॥ गुणविक्रितिविधर्म ॥
 कायिययारूपनाम ॥ जे जाले हेवर्म ॥ अवधारिजे ॥ ३६ ॥ तरिसतरजतम ॥ तिचा सिहि हे नाम ॥ आणि
 प्रकृतिजन्म ॥ भुमिकायका ॥ ३७ ॥ येथ सतर उत्तम ॥ रजत मध्यम ॥ तिहि प्राजितम ॥ साविथाधारे ॥ ३८ ॥
 हे येकी चि वृत्तिचा राश ॥ त्रिगुणत आवडे पाहि ॥ वयसात्रय दे ही ॥ ये किजे वि ॥ ३९ ॥ कामिनते नि किडे

ह

जव जव तु कवोठ ॥ तव तव सोने हिनपडे ॥ पाचि का कसि ॥ ११० ॥ पै सावधपण जैसे ॥ वाहाविले अळस
सुखसिबैसे ॥ घणावोनि ॥ १११ ॥ तैसे अज्ञानांगी कोरे ॥ निगाळिवृत्ति विरुरे ॥ तसतरजद्योर समहिहो
ये ॥ ११२ ॥ अर्जुनागजाण ॥ ययानावगुण ॥ आतादा उखुण ॥ बांधतीते ॥ ११३ ॥ श्लोक ॥ तत्रसतं निर्म
ळात् प्रकाशकमनामयं ॥ सुखसंगेन बध्नाति ज्ञानसंगेन चानघ ॥ ६ ॥ टिका ॥ तरिक्षेत्रस
दशे ॥ आत्मा मोठकपैसे ॥ हे देहमी जैसे ॥ महूर्त करि ॥ ११४ ॥ आजन्म मरणाति ॥ देहधर्मसमस्ती
ममात्ताचिसुति ॥ घेनाजव ॥ ११५ ॥ जैसिमिनाचातोडि ॥ तवपडेनाउंडी ॥ तवगळुआसुडि ॥ जळपार
धी ॥ ११६ ॥ तेविसतलुबुधके ॥ सुखज्ञानाचिपासिके ॥ वाळि जतिमगखुडके ॥ मृगुजैसा ॥ ११७ ॥ मग
ज्ञानेचउफडि ॥ जाणिवेचेखुरखोडि ॥ स्वयंसुखहुधाडी ॥ लातिचेगा ॥ ११८ ॥ तेकाविद्यामानेतोषे
लाभमात्रे हरिखे ॥ मिसंतुसहेहिदेखे ॥ श्लाघोलागे ॥ ११९ ॥ खणे भाग्यनामास ॥ आजिसुखिनाहि
दुजे ॥ विकाराखकेपुंजे ॥ सात्तिकाचेनि ॥ १२० ॥ आणियेणेहिनसेर ॥ लाकणलागेदुसेर ॥ जेविद

७

ते च भरे भूत आंगि ॥५१॥ आपणचि ज्ञानस्वरूप आह ॥ ते गते हृदुः खन वाह ॥ किं विषय ज्ञाने होये
 गगनोये वख ॥५२॥ रावो जैसा स्वप्नी ॥ कपण रिघे धानी ॥ तो दो दाणा ये मानि ॥ इंद्रनामी ॥५३॥ तै से ग
 देहातिता ॥ जालियो देह वे ता ॥ हो लो गे पांडु सूता ॥ वास्य ज्ञाने ॥५४॥ प्रवृत्ति शास्त्रे बुसे ॥ यज्ञ विद्या उपजे
 किं बहुना सुसे ॥ स्वर्ग वरि ॥५५॥ आणिल्लेणे आजि आन ॥ मिवा चूनि नाहि सज्ञान ॥ चातुर्य चंद्र गगन
 चित्तमासे ॥५६॥ अैसे सख सुख ज्ञानी ॥ जिवा सिला उनि कानि ॥ बैला चिकरि वानि ॥ पांगुळा चया ५७
 आता हा चि शरिरी ॥ रजे लिया परि ॥ बांधि जे ते अवधारि ॥ सांघि जे त ॥५८॥ श्लोक ॥ रजो रागात्मकं
 विद्वि त्का संग समुद्र वे ॥ तन्निव ध्याति कौंतय कर्म संगे न देहि न ॥५९॥ श्लोक ॥ हे स्तया चि
 कारणे ॥ जिवा ते रंज उजाणे ॥ हे अभिजाया चेत रणे ॥ सदा चि गा ॥६०॥ हे जि विमोठे करिगे ॥ आणि
 कामाचा मदि लागे ॥ प्रग वारया वळे घे ॥ भुक्ते चिया ॥६१॥ घृते आं बुखुनि आणियाळे ॥ वज्राग्नि च
 साडु किळे ॥ आता बहुथे कुळे ॥ आहे ते थ ॥६२॥ तै सिख वळे चाड ॥ होय दुःखास गठगो ॥ इंद्र श्री हि

७

साकउगमोत्तगे ॥६२॥ तैसि यात्रु छावाठि नलिया ॥ मेरुहि हाता आलिया ॥ तहि खणे ये काधिया ॥
दासणा हिवबघे ॥६३॥ आजिअसते वेचिजैल ॥ तरि पाहे कायकि जैल ॥ असापां गीवडिल ॥ व्यवसा
यमोडी ॥६४॥ जिविताचि कुरों डि ॥ बोवा लु लो गे कवडि ॥ मामि त्रुणा चिया जो डि ॥ कृत लसता ॥६५॥
खणे स्वर्गा हन जोव ॥ तरि कायिते थ स्वावे ॥ यया ला जी धावे ॥ याग कर ॥६६॥ वृता पायी वने ॥ आच
रइया पुर्ते ॥ काम्य वाचूनि हाते ॥ सिवणे नाहि ॥६७॥ पै जिआं तिचा वारा ॥ विसवोनेणे विरा ॥ तैसान
खणे व्यापारा ॥ राती देवो ॥६८॥ काश्चंच बु मासा ॥ कामिनी कयक्ष जैसा ॥ र्गो वलाहो तैसा ॥ विजु नाहि
॥६९॥ ते तुलैनि गावेगे ॥ स्वर्ग संसार पांगे ॥ आगी माजिरिगे ॥ क्रिये चिये ॥७०॥ असादे हि दे हावेग
का ॥ ते लूछे चिया साखळा ॥ खराये पुवाहे गळा ॥ व्यापासचा ॥७१॥ हेरजोगुणांचे दासणा ॥ देहिदे
मा ॥ हि सिबंधन ॥ परिसआता विंदाहा ॥ तमाचेते ॥७२॥ श्लोक ॥ तमस्तु ज्ञानजं विद्वि मोहनं स
र्वदेहिनां ॥ प्रमादात्स्य निद्राभिस्तन्निवधाति भारत ॥ ८ ॥ टिका ॥ व्यवहाराचे हिजे

के ॥ प्रदेजेणे पडके ॥ मोहारात्रीचे काळे ॥ प्रहुडेजे ॥ ७३ ॥ अज्ञानाचे जियाळे ॥ तयाये का लागते ॥
 जेणे विश्वभुलेले ॥ नाचत असे ॥ ७४ ॥ अविवेक महामंत्र ॥ जेमौढ्यप्रदाचे पात्र ॥ हे असो मोहनास्य ॥
 जिवासेजे ॥ ७५ ॥ पार्थाते गातम ॥ रचुनि असे वर्म ॥ चौखरिदे हास ॥ मानीयाते ॥ ७६ ॥ हये क्वचि
 कर शरिरी ॥ माजो लोचनचरि ॥ आणिते धेदुसरि ॥ गोष्टी नाहि ॥ ७७ ॥ सर्व इंद्रिया जाड्या ॥ मना
 माजिमौढ्य ॥ मा ल्हाति दाराळ्य ॥ आतसाचे ॥ ७८ ॥ आंग आंग मोडो मोडी ॥ कार्य जाती अनावडि
 तुसधी परवडि ॥ जांभयाचि ॥ ७९ ॥ उघडियाचि दिशे ॥ देखणे नाहि किरिटी ॥ नाकविताचि उरी ॥ मो
 खणौनि ॥ ८० ॥ पडिलिये खंडी नेणे कान मुरडी ॥ तयाचि परि मुरकुंडि ॥ उकलुनेणे ॥ ८१ ॥ पृथ्वी
 पाताळ जावो ॥ आकाश हिवरियवो ॥ परि उरणे हाभावो ॥ उपलानेणे ॥ ८२ ॥ उचित अनुचित आ
 धवे ॥ सासुरतानाखे जिवे ॥ जेथि चातथलो मावे ॥ असे मी धा ॥ ८३ ॥ उभुनिकरतळे ॥ पडि घाये कपो
 ले ॥ पायाचे शिरियाळे ॥ मोडुलागे ॥ ८४ ॥ आणनि द्रावि विचांगु ॥ जि वि आधी लागु ॥ सापि जा

तास्वर्गु ॥ वा बो लणे ॥ ८५ ॥ ब्रह्मा यु हो इजे ॥ मानि जे लिया चि असि जे ॥ हे ग चू नि हु जे ॥ व्यसन
ना हि ॥ ८६ ॥ वाट जा ता वा ये ॥ क लू हा ता हि डा का लागे ॥ अ म त परि ने ये ॥ ज रि नि ज आ लि ॥ ८७ ॥
ते वी चि अ क्रो श बे के ॥ व्या पार का णे वे के ॥ नि ग ले त रि आ धे के ॥ रा स जै से ॥ ८८ ॥ के का कै से रा हा य
वे ॥ को णे सि का इ बो ला वे ॥ हे रा क ते कि ना गे वे ॥ हे हि ने णे ॥ ८९ ॥ व ण वा मि या अ घ वा ॥ पा खे चि पु
सू नि ध्या वा ॥ प तं गु या ह वा ॥ घा ती जे वि ॥ ९० ॥ तै सा व ब घे सा हा सा ॥ अ क र णी च धि व सा ॥ किं बहु
ना टे सा ॥ प्र मा दु र्भे ॥ ९१ ॥ ह वं नि द्रा त्त स्य प्र मा दि ॥ त म इ हि त्रि वं धी ॥ बा धे नि रू पा धि ॥ चो ख रा ते ॥ ९२ ॥
॥ श्लोक ॥ सत्सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत ॥ स्तान्मावृत्य तु तमः प्रमादे संजयतुत ॥ ९३ ॥
रि का ॥ जै सा व ही का शि भे रे ॥ तै दि से का ष्टा को रे ॥ व्या म घटे आ वे रे ॥ ते घ ठा का श ॥ ९४ ॥ ना ना
स रा व र भ र ले ॥ तै चं द्र ख ते थु विं ब ले ॥ तै से गु णा भा सि का ध ले ॥ आ म्बु ग मे ॥ ९५ ॥ परि ह रौ नि क
फ वा त ॥ जै दे हि आ टो पि पि त ॥ तै क रि सं त स ॥ दे ह जे वि ॥ ९६ ॥ का व रि व ष त प जै से ॥ जि णो नि

९

शीतचिदित्ते क्वा होय हिव औसे ॥ आकाशेह ॥ ६६ ॥ नागस्व न जायति ॥ लोपू नित्ये सुषुप्ति ॥
 तैक्षण्ये कचित्तरुति ॥ तेचिहोय ॥ ६७ ॥ **श्लोक** ॥ रजस मश्याभिभूयः सतं भवति भारत ॥ रजः
 सतं तमश्चैव तमः सतं रजस तथा ॥ १० ॥ **टिका** ॥ तैसिरजतमेरु रवि ॥ जैसख माजु मिर वि ॥ तै जि
 वाकर निमणवी ॥ सुखिया नामी ॥ ६८ ॥ तैसेचिसखरज ॥ लोपू नितमाचे भोज ॥ बळघे तै सहज ॥
 प्रमादिहोये ॥ ६९ ॥ तयाचिगापरिपादि ॥ सखतमाते पादि ॥ घातू निजेका उगी ॥ रजोगुण ॥ २० ॥
 तेकाकर्म वाचू नि काहि ॥ आन सौंदर्य चि नाहि ॥ तेसेमानिदेहि ॥ देह संजु ॥ १ ॥ त्रिगुण दृष्टी निरोप
 ण ॥ तिस्कोवि सांगीतले जाण ॥ आतासख दृष्टी लक्षण ॥ सादर परियेसा ॥ २ ॥ **श्लोक** ॥ सर्व
 द्योरुदेहे स्मिन्प्रकाश उपजायते ॥ ज्ञानं यदा तदा विद्यादि दृश्यं सखमित्कृत ॥ ७१ ॥ **टि
 का** ॥ पैरजतम विजये ॥ सख गादेही द्ये ॥ वाठ ताचिनेतिये ॥ हेसिहोति ॥ ३ ॥ जेप्रज्ञा आतुलि
 केडे ॥ न ॥ समाति बौरिवो संडे ॥ वसंति प प्रखडे ॥ इति जैसी ॥ ४ ॥ सर्वेन्द्रियाचा आंगणि ॥ वि

ही

९

वे कु करिरा बणि ॥ साच चिकर चरणि ॥ हो ती ठो बे ॥ ५ ॥ राज हं सापु ॥ चाचु चेचि आगरे ॥ तो डी जे
विसगडे ॥ क्षिरानिरान्ने ॥ ६ ॥ तेवि दोषा दोष विवेचि ॥ इंद्रिय होती पारखी ॥ नि यमु बारे पायि चि ॥
वोळगे तै ॥ ७ ॥ नाश्कणे ते कानचि वाचि ॥ नपा हावे ते दिशि चि गाळि ॥ अवाच्ये ते राखि ॥ जिभचि
गा ॥ ८ ॥ वानि पुखा जै से ॥ पको लो गकाळ वेसे ॥ निषिद्ध इंद्रिया तै से ॥ समारन के ॥ ९ ॥ धाराध
रकोळ ॥ महानदी उचं वेळ ॥ तै सि बुद्धि पाघवे ॥ शास्त्र जाति ॥ १० ॥ अगपु निवे चादिसि ॥
चंद्र प्रभा धावे आकाशि ॥ ज्ञानी रत्ति तै सी ॥ फाके सैं घ ॥ ११ ॥ वासना एक वाटे ॥ प्रवृत्ति वोळगे ॥
मानस विटे ॥ विषया वरि ॥ १२ ॥ एवं सत्व वाळे ॥ तै के चि न्हुडे ॥ आणि निधन हि घडे ॥ तै कजरि ॥ १३ ॥
तरि जै सी चि घरि संपति ॥ आणि तै सी चि उदार्य धैर्य रत्ति ॥ मां परत्रा आणि कीर्ति ॥ कान हावे ॥ १४ ॥
कापा हाते निया सुयाणे ॥ जाळया पर गुणे ॥ पठि र्थे ते ये पाहुणे ॥ स्वर्गी निया ॥ १५ ॥ मग गो मट
यातया ॥ अवळि असे धनं जया ॥ ते वि सत्ती जाणे दे हा ॥ के अथि गा ॥ १६ ॥ जै स्व गुणी उद्भट

घे ३ निसत चोखरा ॥ निगे सां ३ निका पट ॥ भोगक्षमेहे ॥ ७ ॥ अवचट औसा जो जाये ॥ तो सखाचि
 नवा होये ॥ विं बहु ना जन्म काहे ॥ हानिया माजि ॥ ७ ॥ सांग पाधनुर्धरा ॥ रावो रायपणे डोंगरा ॥
 गेलया आपुरा ॥ हायका १० ॥ नातरियेथि चा दिवा ॥ नेकासे जिया गावा ॥ तो ते थत ही पां उवा
 दी पूचि कि ॥ २२ ॥ तैसिये सत् सुद्धि ॥ आगकि हाना सिद्धि ॥ तरंगा बोलागे बुद्धि ॥ विवेका
 वरि ॥ २१ ॥ पै महदादि परिपारि ॥ विचारु निसवदि ॥ विचारा सकटपोरि ॥ जिरो निजाये ॥ २३ ॥ क
 तिसा सत तीसावे ॥ चो विसापंच विसावे ॥ तिही नुरो निस्वभावे ॥ चतुर्थजे ॥ २३ ॥ औसे सर्वजे सर्वा
 तम ॥ जोले असे जया सुगम ॥ तथासेवे निरोपम ॥ गहे देहा ॥ २४ ॥ याचि परिदेख ॥ तमसत्व अ
 धो मुख ॥ वैसो निजे आगकि का धरि २५ ॥ श्लोक ॥ लोभः प्रवृत्तिरारंभः कर्मणामशमस्यह ॥
 रजस्येतामिजायंते विद्वद्भरतर्षभ ॥ १२ ॥ टिका ॥ आपु तथा कार्यचा ॥ धुमा उगावी देहाचा ॥
 माजवितैचि हाचा ॥ उदा औसा ॥ २६ ॥ परकारादिकुपडे ॥ परिविस्व ॥ औसे नावडे ॥ मणसे लियेचे

३

नितोडे **सै च चारि ॥२७॥**

॥२७॥ हा गवोवरिलो भु **॥** करि स्वैखा चारु **॥** विद्यतितां अलाभु **॥** ते ते उरे **॥२८॥** आणि
आड पडिलिया **॥** उद्य मजात भलतया **॥** प्रवृत्ति धने जया **॥** हा तुन करि **॥२९॥** ते कीचिये का धा प्रसा
दु **॥** का करावा अश्वमेधु **॥** असा अचार द्यदु **॥** घे उनि उरि **॥३०॥** नगरे चिर चिस्वा वि **॥** जकारा
ये निर्मा वि **॥** महावने लावा वि **॥** भाना विधे **॥३१॥** असे असा अफारिक मि **॥** समांरभ उपक्रमि
आणि द्रष्टा दृष्ट कामी **॥** पुरे न लणे **॥३२॥** सागर हि सांडि पडे **॥** आंगी न ल्काय ती न कवेडे **॥** असे अ
भिका वी लोडे **॥** दुर्भरत्व **॥३३॥** स्पृहा मना पुढा पुढा **॥** अशे चो घे दवडा **॥** विश्व द्या पेचा डा **॥** पा
या तकि **॥३४॥** इत्या दिवा उतार जी **॥** इर्ये चि ने हो ती सा जि **॥** आणी असा समा जी **॥** चे चे जरि
देहे **॥३५॥** तरि आघवा चि इहि **॥** परिवार ला आन दे ही **॥** रिघे परयो नी हि **॥** मानु की चि **॥३६॥**
सुरवाडे सि भिकारि **॥** वसोपाराज मं दि रि **॥** तहिका अवधारि **॥** रावो हो इत **॥३७॥** कै उते थ करवाडे

११

हुन चुके गापुडे ॥ नेश जो का व होडे ॥ समार्थो च नि ॥ २७ ॥ एणो नि व्यापारा हाति ॥ उ सं तु दे लाना
 राति तैसे या चिये पाति ॥ जुं पि जेतो ॥ ३९ ॥ कर्म जडा चा ययि ॥ किं बहुना हो येर हि ॥ जोर जोर ति चा
 डोहि ॥ बुडो नि नि मे ॥ २४० ॥ मगतै सा चि पु उति ॥ ज स व रति गि वू नि ये उ न्नि ति ॥ त मो गु ण ॥ ४१ ॥ **स्त्रोत्र**
अ प्र ना शो प्र वृ ति श्च प्र मा दो मो ह ए व च ॥ त म स्य ता नि जा यं ते वि वृ द्य कु र्तु नं द न ॥ १३ ॥ रि का ॥
 तै चि जिये लिगे ॥ दे हि ची स वा त्य संगे ॥ जिये परि स चो गे ॥ श्रा त्र ब के ॥ ४२ ॥ तरि औ से हो य म न ॥ जै
 से श वि चं ड हि न ॥ श त्रि चे का ग ग न ॥ अ वे से चिये ॥ ४३ ॥ तै से अ न्तर अ सो स ॥ हो य स्फूर् ती न ॥ उ च्य
 स ॥ वि चा रा चि भा ष ॥ हा र पे तै ॥ ४४ ॥ बु द्धो मे चे वे नां धो डि ॥ हा य वा व रि म वा क सां डि ॥ आ
 र बो दे रा धु डि ॥ जा ला दि से ॥ ४५ ॥ अ वि वे का चे नि मा जे ॥ स वा त्य श री र गा जे ॥ ये क ले नि घे पे दि
 जे ॥ मो ठे वं त थे ॥ ४६ ॥ आ चा र भं गा चि हो डे ॥ रू प ति इं द्रि या पु य ॥ मं र ज रि ते णे चि के डे ॥ क्रि या जा य
 ४७ ॥ पा हि आ णी क हि ये क दि से ॥ जे दु व्ध ती चि त उ त्का से ॥ आं धा रि दे ख णे जै से ॥ उ डु मा चे ॥ ४८ ॥

११

तैसे निविधा च निनावे ॥ भले ते हि भरे होवा ॥ तिये विविधा वा ॥ घेतिकरणे ॥ ४९ ॥ मदि रान घेताडु
 ले ॥ सनि पात की ण बोले ॥ नि प्रमुचि भुले ॥ पिसे जैसे ॥ २५ ॥ चित तरि गेले आहे ॥ परि उन्मनी
 ते न के ॥ ऐसे मात्का ति जे माहे ॥ माजि रे नि ॥ ५० ॥ किं बहु न ऐसे सि ॥ इये चि के त म पो सि ॥ जै वा छ
 आयि तिसी ॥ आपु लिया ॥ ५२ ॥ आ णि हे चि हो य प्रसंगे ॥ मरणाचे जरि खागे ॥ तरि ते तुले नि हि
 रिगे ॥ ते म सी तो ॥ ५३ ॥ राश राश पण बि जी ॥ साये नि आंग ल जि ॥ मग विरु ते ते दु जि ॥ गो रि आहे गा
 ॥ ५४ ॥ प्र णौ नि त मा चिये को थे ॥ बां धो निया सकला ते ॥ दे ह जाय ते मा दौ ते ॥ त मा चे चि हो ये ॥ ५५ ॥
 पै हो दु नि दि प क लिका ॥ ये र आ गी वि सो का ॥ का जे थे लगे ले ते य आ सि का ॥ तो चि आहे ॥ ५६ ॥
 आ ता का श ये ण बहु वे ॥ जो त मो र क्षी मृ ल्का हे ॥ तो प शू का प क्षी हो ये ॥ सा उ का द मी ॥ ५७ ॥ प्र तो
 कां य रा स ते प्र व दे तु प्र व यं या ति दे ह श्रु त् ॥ त दो त्त म वि दा लो का न म त्वा न्प्र ति प द ते ॥ ५८ ॥
 रि का ॥ ये णे चि पै का र णे जे नि फ जे स त गु णे ते सु क्त त औ से ष णे स्वा त स मो ५८ ॥ प्र णौ नि

१२

तया निर्मला ॥ सुखज्ञानी सरका ॥ अपूर्वचक्रका ॥ सा लीकते ॥ ५९ ॥ श्लोक ॥ रजसि प्रकयंगत्वा
 कर्मसंज्ञिषु जायते ॥ तथा प्रती नस्तमसि मूढया मिसु जायते ॥ १५ ॥ टिका ॥ मगराजसाज
 या क्रिया ॥ तिया इन्द्रावली पिकलिया ॥ जे सुखचिता रनिया ॥ फळति दुःख ॥ ६० ॥ कानि बोळि
 येचे पिक ॥ वरिगे उ आतविख ॥ तेसे तेराजसेदख ॥ क्रिया फळ ॥ ६१ ॥ तामस कर्म जेतुके ॥ अज्ञा
 न फळे चिपिके ॥ वि कां कर विवे ॥ जया परि ॥ ६२ ॥ श्लोक ॥ कर्मणः सुखतस्याहुः सात्त्विकं नि
 मित्तं फलं ॥ रजैस्त फलं दुःखप्रदानं तमसः फलं ॥ १६ ॥ टिका ॥ त्रणोनि वार अर्जुना ॥ यथ
 सत्चिह्नुतुज्ञाना ॥ जैसा कादिनमाना ॥ सूर्युहा ॥ ६३ ॥ आणितै सचिह्नुजाण ॥ लोभासिरजका
 रण ॥ आपुले विस्मरण ॥ अद्वैताजे वि ॥ ६४ ॥ मोहा अज्ञान प्रमदा ॥ यया मैले दोष रंदा ॥ पुउनि
 पुउति प्रबुद्धा ॥ तमचि मुळ ॥ ६५ ॥ अैसे विचाराचा डोक ॥ तिन्नि गुणले वेगळे वेगळे ॥ दावि लाजे
 सा आवका ॥ तत्कृतिचा ॥ ६६ ॥ श्लोक ॥ सत्त्वा संतायते ज्ञाने रजसो लोभ एव च ॥ प्रमा

स

या

दमोहौ तमसोभवतो ज्ञानमेव च ॥१७॥ **टिका** ॥ तवरज तमेदं हि ॥ देखिके प्रौढ पतनी ॥
आपिसख वाचूनिनेणी ॥ ज्ञानाकेड ॥ ६७ ॥ त्रणोनिसा खिकरति ॥ येकजाले जन्म वती ॥ सर्वयोगे
चतुर्थी ॥ भक्तिजैसि ॥ ६८ ॥ **श्लोक** ॥ उर्ध्वं गच्छति स त्रस्थामध्ये तिष्ठति राजसाः ॥ अधन्यगु
पवति स्था अधो गच्छति तामसाः ॥ १७० ॥ **टिका** ॥ तैस सत्वाचे नि न उनाचे ॥ असणे जाणे ज
याचे ॥ ते तनु या गी स्वर्गाचे ॥ राय होति ॥ ६९ ॥ याचि परि पै रजे ॥ जिहिका जिजे मरिजे ॥ तिहि मनु
व्या होयिजे ॥ मृत्यु हो कि ॥ ७० ॥ ते थ सुसुदुःखाचे खिचेटे ॥ जे विजे एक चिताटे ॥ जे थ इये मरण
वोटे ॥ पडिले नुठी ॥ ७१ ॥ आणि तयाचि स्थिति तमी ॥ जे वाछे नि निमे भोग क्षमी ॥ ते घेति नरक भु
मी ॥ मूळ पत्र ॥ ७२ ॥ एवं वस्तु चिया सता ॥ त्रिगुणा सिपांडुसुता ॥ दावि लि सकारणता ॥ आघ वीचि ॥ ७३ ॥
॥ **श्लोक** ॥ नान्यगुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ॥ गुणेभ्यश्च परं वेति मद्रावं सोधिग
च्छति ॥ १९९ ॥ **टिका** ॥ पैवस्तु वस्तु खे आसिके ॥ ते आपणपे गुणा सारिखे ॥ देखे नि कार्य विशेष ॥

ये अनु करेगा ॥ ७१ ॥ जैसे कास्य नीचे निराजे ॥ जैसे पर चक्रद खिजे ॥ तै हारि जै त होइजे ॥ आ
 पणचि ॥ ७२ ॥ तै से मध्योर्ध आध ॥ हे जे गुणरती भेद ॥ तै दृष्टि वाचूनि सुद्ध ॥ वस्तु चि असे ॥ ७३ ॥
 परि हे वा हाणि असे ॥ त ही तुज आनन दिसो ॥ परि से ते सांगत सो ॥ सा गी लगे ही ॥ ७४ ॥ तरि औ
 से मिज निजे ॥ सामर्थ्य ति ही सहजे ॥ हो ती देह व्याजे ॥ गुणचि हे ॥ ७५ ॥ इंधानाचे नि आकार ॥
 आ गि जै सा अवतरे ॥ का अवगे तस्वरे ॥ सु मीर सु ॥ ७६ ॥ नाना दहियाचे नि मिसे ॥ परिणमे दुध
 जैसे ॥ कामूर्त होय उसे ॥ गो डिजे वि ॥ ७७ ॥ तै से हे स्वातःकरण ॥ देह चि हो ती त्रि गुण ॥ ह्युणो नि
 वेधासि कारण ॥ घेउ फिर ॥ ७८ ॥ परि चोजे ह धनु दुरा ॥ जे ये वळा हि गुंफिरा ॥ मोक्षाचा संसारा
 उणानके ॥ ७९ ॥ गुण आपुला ते निर्धर्मे ॥ देहि च माघो तसा उमे ॥ चाकता हि नखो मे ॥ गुणा ती
 तता ॥ ८० ॥ असि मुक्ति असे सहज ॥ ते आता परि सउ तुज ॥ जेतु तानां बुज ॥ दिरफु कि ॥ ८१ ॥
 आणि गुणी गुणा जोग ॥ चैतन्य नके मागे ॥ बो लिलो ते स्वागे ॥ ते वीचि हे ॥ ८२ ॥ तरि पार्था जै औ

से ॥ बोधले निजिवेदिसे ॥ स्वप्न का जै से ॥ चेइले नि ॥ ८६ ॥ नातरि आपण जकि ॥ बिंबले तिरो
निकवि ॥ चळत होता कळोळि ॥ अने कथा ॥ ८७ ॥ कान टले नि लाघवे ॥ नहु जै सान सकवे ॥ तैसे
गुण जातर खावे ॥ न होनिया ॥ ८८ ॥ पैरुस्तुत्रय आकारो ॥ धरुनिया हि जै से ॥ नेदिजे चिये
वोवो से ॥ वेगळे पणा ॥ ८९ ॥ तैसे गुणि गुणा परोते ॥ जे आपण पे असे आयिते ॥ तिये अहं वै
से अहंते ॥ मूळिके चिये ॥ ९० ॥ तैतधू निमग पाहाता ॥ अणे साक्षी मि अकर्ता ॥ हे गुण चिक्रि
या जाता ॥ नियो जना ॥ ९१ ॥ सत्वर जत माचा ॥ भेदिप सुसु कर्म चा ॥ होत असे तो गुणा चा ॥ वि
कास हा ॥ ९२ ॥ यया माजि मी असा ॥ वनिका वसंतु जैसा ॥ नव लक्ष्मी विलासा ॥ हे तु भूत ॥ ९३ ॥
कातारंगणी लापावे ॥ सूर्य कांति उदिपावे ॥ कमळि विकाशावे ॥ जावे तमे ॥ ९४ ॥ येकोणा चिक्रा जे
कहि ॥ सवितया जै सिमाहि ॥ तैसा अकर्ता मी देहि ॥ सुता रूप ॥ ९५ ॥ मिदा उनि गुण देखे ॥ गुण ता
हे मिया पोखे ॥ याचे नि निःशेषे ॥ उरते मी ॥ ९६ ॥ अैसे नि विवेके जया ॥ उदो होय धनं जया ॥

१४

ये गुणाति तत्तया ॥ १३ ॥ ध्वपंथे ॥ १० ॥ श्लोक ॥ गुणानेतानतीसत्रीन्देहीरेहसमुद्भवान् ॥
 जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तो मृतमश्नते ॥ २० ॥ टिका ॥ आत्मानिर्गुणअसे आणिका ॥
 तेतो जाणे ॥ अचुक ॥ जे ज्ञानके ले टिक ॥ तथा चिवरि ॥ १० ॥ किं बहुना पांडुसुता ॥ औसातो मासी
 सता ॥ पावे जैसिसरिता ॥ सिंधुवगा ॥ ११ ॥ नळिके वरुनि उटिका ॥ जैसा मुकशाखे बैसका ॥
 तैसा मुकअहंता वेटका ॥ तो मील्लणो नि ॥ ३० ॥ अगा अज्ञानाचियानिदा ॥ जो घोरतहा
 तावद्वदं ॥ तो स्वरूपी प्रबुद्धा ॥ चे इकाकि ॥ १ ॥ पै बुद्धिभेदाचा अरिसा ॥ तथा हातौ नि पडि
 का विरेशा ॥ लणो नि प्रतिमुखाभासा ॥ सुकळातो ॥ २ ॥ देहाभिमानाचा वारा ॥ आता वा जोटे
 का विरा ॥ तेहे क्यविचिसागरा ॥ जिवेशाहे ॥ ३ ॥ लणो नि मद्भावेसि ॥ प्राप्तिपाविजेतेणे सरिसि
 वर्कति आकाशि ॥ घनजातजे वि ॥ ४ ॥ तेवि मीहो उनि निरुता ॥ मगदहिचिइयअसता ॥ ना
 गोवेदेहसंभुता ॥ गुणासितो ॥ ५ ॥ जैसा भिंगाचे निघोर ॥ दिपप्रकाशुनावेर ॥ कानविशचिसा

गोर ॥ वडवानळु ॥ ६ ॥ तैसा आत्मगेत्ता गुणाचा ॥ को धुन मैब तयाचा ॥ तो देहि जैसा
व्योमिचा ॥ चंद्रजळि ॥ ७ ॥ तिन्हि गुण आपुत्ता लया प्रौढी ॥ देहि नाचविति बागडी ॥ तो पाहो
हि धाडि ॥ अहंतेते ॥ ८ ॥ हागवो वरि ॥ ने हरो निगेत्ता अंतरि ॥ आता कायिवर्त शरिरी ॥ काहि
नेणे ९ सांडूनि अंगिचिखाळि सर्पु रिगळिया पाताळि ॥ तैवचो कोणसाभाळि तैसेजा
ले ॥ १० ॥ कासोरभ्यजीर्णु जैसा ॥ अमोदमिको निजाय आकाशा ॥ माघाराकमळकोशा ॥
नेयेचितो ॥ ११ ॥ पैस्वरूपसमरसे ॥ तथाहिगा जाते तैसे ॥ तेथे कि धर्महू कैसे ॥ नेणे देह ॥ १२ ॥
ब्रणोनि जन्मजन्म जरा मरण ॥ १३ ॥ यादि जैसा हि गुण ॥ ते देही चिठले कारण ॥ नाहि तथा ॥ १४ ॥
घटाचिया खापरिया ॥ घटाचा भागीपेडिलिया ॥ महदाकारा आपे सया ॥ जातेच असे ॥ १५ ॥
तैसि देह बुद्धि जाये ॥ जै आपण पाअरौ होये ॥ तै आनका हि आहे ॥ ते वाचुनि ॥ १६ ॥ येणेथो
रे बांधले पणे ॥ तथागो देहि असणे ॥ ब्रणोनि तो मी ब्रणे ॥ गुणानितु ॥ १७ ॥ ६ ॥ योदवाचिया

बोद्धा ॥ पार्थु असुखावत्ता ॥ मेघे संबोखिता ॥ मयोरजैसा ॥ १७ ॥ **श्लोक ॥** आर्जुन उवाच ॥
 कैर्लिगे स्त्री न गुणानेता नती तो भवति प्रभो ॥ किमाचारः कथंचैतां स्त्री न गुणानतिवर्तते ॥ २१ ॥
॥ टिका ॥ तेणे तोषे विरूपसे ॥ जिको फिचिन्हितो दिसे ॥ जयामाजिवसे औसा बोधु ॥ १७ ॥ तो
 निर्गुण कायि आचरे ॥ कैसे निगुण निस्तेरे ॥ हे सांघि जो माहेरे ॥ छेपेचे नि ॥ १९ ॥ या अर्जुना चिया
 प्रश्ना ॥ तो षड्गुणाचाराणा ॥ परिहास आकर्ण ॥ कोलत प्रसे ॥ २२ ॥ **॥ श्लोक ॥** श्री भगवा
तुवाच ॥ प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पांडव ॥ नद्ये हि सं प्रवृत्तानि न निवृत्तानि कांक्षति ॥ २३ ॥
टिका ॥ अणपार्थतु सिनवाइ ॥ हे यतुले चिपु ससिकायि ॥ तेनावचितया पाहि ॥ साचेतरेके ॥ २१ ॥
 गुणातिजयानोवे ॥ तो गुणाधीनु तरिनके ॥ नाहोय तरि नागेवे ॥ गुणायया ॥ २३ ॥ परिआधीनु
 कानागेवे ॥ हेचि कैसे जाणोवे ॥ गुणाचिये रवरवे ॥ माजिअसता ॥ २३ ॥ हासंदे होजरि वाहासि ॥ त
 रि तु सुखे पुसोला हासि ॥ परिसंजातातयासि ॥ रूपक ॥ २४ ॥ तरि रजाचे निमाजे ॥ हे हि कर्मचिअ

नेजे ॥ प्रवृत्तिजे घेइजे वेराकुनि ॥ २५ ॥ तैमीचिका कर्मदु ॥ असेनिये श्रीमादु ॥ कादबिद्रुलिबु
द्धिविदु ॥ तोहिनाहि ॥ २६ ॥ अथवासताचेनिअधिके ॥ जैसर्वेद्रिइ ज्ञानफोके ॥ तैसुविद्यतानतो
षे ॥ उभजेहिना ॥ २७ ॥ कावाटिनेळनितमे ॥ नगिबिचिमोहभ्रमे ॥ तैअज्ञानतेनश्रमे ॥ घिणेहि
नाहि ॥ २८ ॥ पैमोहाचाअवसरि ॥ ज्ञानाचिचाउनधरि ॥ ज्ञानेकर्मनादरि ॥ होतानदुखी ॥ २९ ॥ सा
यं प्रातमध्यान्हा ॥ यातिहिकारुचिगणण ॥ नाहिजेवितयना ॥ तैसाअसे ॥ ३० ॥ तयावेग
ळाचिकायिप्रकारे ॥ ज्ञानीखयावेअसे ॥ काइजकार्णउपाउसे ॥ साजाहोये ॥ ३१ ॥ नाप्रव
तेलेनिकर्मे ॥ कर्मठखतयाकागमे ॥ सांगैहिमवंतुहिमे ॥ कोपेकाइ ॥ ३२ ॥ नातरिमोहोअ
तया ॥ कायिपाज्ञानामुकिजैळतया ॥ होमाआगीतेउन्हाळया ॥ जाळवतसे ॥ ३३ ॥ सा
क ॥ उदासीनवदासीनोगुणैर्यानविचाळते ॥ गुणावर्तंतश्य ॥ वयोवतिष्टतिनेगते ॥ ३४ ॥
टिका ॥ तैसेगुणागुणकार्यहे ॥ आघवेचिआपणआहे ॥ लुणैनिवैकेनके ॥ तडातोडि ॥ ३५ ॥

१६

युवकीयागाप्रतिती ॥ तोदेहा आत्मअसवस्ती ॥ वाटे जानागुंति ॥ माजिजैसा ॥ ३५ ॥ तोजिण
 ता नाहारवि ॥ तैसा गुणनेके नाकरवि ॥ जैसीकाश्राणकी ॥ संग्रामीचि ॥ ३६ ॥ काशरीरा आतुलु
 प्राणु ॥ घरिअतिथ्याचाब्राह्मणु ॥ नानाचोहटाचास्वणु ॥ उदासुजैसा ॥ ३७ ॥ आणिगुणाचा
 यावाजावा ॥ ठेठेचकेनापांडवा ॥ मृगजळांचोहळावा ॥ मेरूजैसा ॥ ३८ ॥ हेबहुतकायबोळि
 जे ॥ व्यामकोरनिनवचिजे ॥ कासूर्यनगिळिजे ॥ अंधकोरा ॥ ३९ ॥ स्वप्नकागाजियापरि ॥ जा
 गतयातेनसितरि ॥ गुणितैसाअवधारि ॥ नबांधिजेगा ॥ ४० ॥ गुणिकीरनातुडा ॥ पैदुरुनिजे
 पाहकोडे ॥ तैगुणदाषसायखडे ॥ सभ्युजैसा ॥ ४१ ॥ सहर्मेसाविकी ॥ रजतरखोविषितममोहा
 दिक्कि ॥ वर्ततसे ॥ ४२ ॥ परितयाचिगासता ॥ होतीगुणक्रियासमस्ता ॥ हृपुडेजाणेसविता ॥ दोक्कि
 काजेवि ॥ ४३ ॥ समुद्रचिभरती ॥ सोमकांतचिपासरति ॥ कुमेदुविकासति ॥ चंद्रतोउगा ॥ ४४ ॥
 कावाराचिवाजेविसे ॥ गगेननिस्वळअसिजे ॥ तैसागुणाचियेगजबजे ॥ डोलेनाजा ॥ ४५ ॥

१६

सु

अर्जुनायेणेक्षणे ॥ लो गुणा ती तु जाणे ॥ परि आता आचरणे ॥ तया चिये ॥ ४६ ॥
क ॥ समदुःखः स्वस्वः समलोप्याश्मकांचनः ॥ तुल्यप्रियाप्रियोधीरस्त्वल्पनिंदात्म संस्क
तिः ॥ ४७ ॥ **रि ॥** तरिवस्त्रासिपाठपोदि ॥ नाहिसूतवाचूनिकिरिठी ॥ असे सुयेदिठी चरा
चरमदपे ॥ ४८ ॥ **प्र ॥** णो निसुखदुःखासरिसे ॥ कांठे आचरे तेसे ॥ रिपु भगू ता जेसे ॥ हरिचेदे
णे ॥ ४९ ॥ **य ॥** रुवितहिसहजे ॥ सुखदुःखतैचिसविजे ॥ देहजळि हायिजे ॥ मासोळिजे ॥ ५० ॥
आतातेतवतेणे सांडिते ॥ ओह स्वरुपे सीचिमांडिते ॥ सस्यांतिनिवडीते ॥ बीजजेसे ॥ ५१ ॥
कावोषसांडुनिगांग ॥ रिद्यो निसमुद्राचे आंग ॥ निस्तरलितगवग ॥ खकाकाचि ॥ ५२ ॥ ते वि
आपण पाचिजया ॥ वस्ती जाळिगाधनं जया ॥ तयादेहि आपसया ॥ सुखतैसेदुःख ॥ ५३ ॥ रा
त्रितैसेपाहले ॥ हृधारणा जेवितकृजाते ॥ आत्मारामुदेह आतले ॥ दंदतैसे ॥ ५४ ॥ पै निद्रि
ताचेनि आंगेसि ॥ सापुतैसि उर्वरी ॥ तेविस्वरुपस्था सरिसि ॥ देहिदेदे ॥ ५५ ॥ **प्र ॥** णो नित

ॐ ॥ जन्म लीला कर्म फले ॥ तेतो आगी ६१ ॥ दृष्ट्या दृष्ट्या चेनि नो वे ॥ भावोचि जिविनु गेवे ॥ सेविजेस्य
भावे ॥ पैरे होये ॥ ६५ ॥ सुखेना स्वसणे ॥ पावाणुका जेणे मोने तैसिसां डिमां डिमेने ॥ वज्रिती सा ॥ ६६ ॥
आता क्विति हाचि विस्तार ॥ जाणे औसा आचार ॥ जयाते तो चिसा चार ॥ गुणा ती तु ॥ ६७ ॥ गुणाते
अतिक्रमणे ॥ दोड उपाये जेणे ॥ तो आता आयी कल्पणे ॥ श्री दूरुळ नाथु ॥ ६८ ॥ ॥ प्रलोका ॥ मांच
योव्य भिचारेण भक्तियोगे नसेवते ॥ सगुणा स्वमतीसै तान् ब्रह्म भूयाय कल्पते ॥ ६९ ॥
॥ रिक्ता ॥ तरि व्यभिचार रहितचित्ते ॥ अश्रुतियोगे माते ॥ सेवी तो गुणाते ॥ जाकू शुक ॥ ६९ ॥
परिकोणमी कैसि भक्ती ॥ व्यभिचारा काजसि व्यक्ति ॥ हे आघवीचि निरुति ॥ हो आविळगे ॥ ७० ॥
तरि पार्था परियसा ॥ मितवयथे औसा ॥ रत्निद्विबो जैसा ॥ रत्नचिते ॥ ७१ ॥ कांडवपणचिनि
२ ॥ अवकाशुचि अंबर ॥ गोडीते चिसाख ॥ आन नाहि ॥ ७२ ॥ वक्तु तेचि ज्वाळ ॥ दळाचि नाव

रीमिआन॥ नोहचिमा॥ ८८॥ ॥ ॐ से निवासमरसे॥ दृष्टि जै उक्तासे॥ तैपै भक्ति ॐ से॥ आक्षी वृण
८९॥ ॥ आणिलानाचे चांगवे॥ येचि दही नावे॥ यागचे हि आघवे॥ सर्व स्वहे॥ ८९॥ सिंधुआणि ज
कधरा॥ प्रांजितागति धखंडधारा॥ तैसि वृत्तिविरा॥ प्रवर्तते॥ ९०॥ काकुहे सिआकाशा॥ तादि
सादाना हि जैसा॥ तोपरापेरयुतैसा॥ यकवेरगा॥ ९१॥ प्रति विंबौनि विंबवरि॥ प्रभेचि जैसि उ
जरि॥ तैसां हृत्ति अवधारि॥ तैसि होये॥ ९२॥ ॐ से निमगपरस्पर॥ तैसां हृत्ति जै अवतरे॥ तै ति
यहि संकरसे॥ ॥ आपै सया॥ ९३॥ ॥ जैसां संधवाचारवा॥ सिंधुमाजिपांडवा॥ विरातया विरवावा
हे हि यके॥ ९४॥ ॥ नातरि जातुनि वृण॥ व न्ही हि विसे आपण॥ तैसे भदुनासूनि जाण॥ ॥ ज्ञाननुरे॥ ९५॥
मासे पै तपण जाये॥ भक्तुहे ॐ तैपण गये॥ ॥ अनादि ॐ क्यजे आह॥ तैचि निवेडे॥ ९६॥ ॥ आत्मगुणाते
तेकिरीये॥ जिणयानकृति गोदि॥ जैयकपजा हि मिदि॥ पडासरळि॥ ९७॥ ॥ विंबहुना ॐ सिदशा॥ तै
॥ प्रवगा सुउसा॥ हे तोपावे जोहेसा॥ माते भजे॥ ९८॥ ॥ पुउति इ हि लिं जी॥ भक्तु जो मासाजगी॥

हे ब्रह्मतात याका गि ॥ पति व्रता ॥ १६ ॥ जै से गंगेचे नि को घे ॥ उ कमळित ज कजे नि गे ॥ सिंधू पदत
 या जोगे ॥ आन नाहि ॥ १७ ॥ तै सा ज्ञाना चिया दि रि ॥ जो मोते से वि किरी सी ॥ होय ब्रह्म ते चा मु कु टि ॥ चुडा
 खने तो ॥ १८ ॥ या ब्रह्म त्वा सी चि पार्थ ॥ सा यूज्य औ सि ब्य व स्था ॥ या चि ना व चो या ॥ पुरु कार्थु ग ॥ १९ ॥
 परि मा से आ रा धन ॥ ब्रह्म की होय सो पान ॥ यथ मी ह न सा धन ॥ गमै न हो ॥ २० ॥ श्लोक ॥ ब्रह्म
 णो हि प्रति ष्ठा हु म मृत स्या व्य व स्य च ॥ रा ष्य त स्य च ध र्म स्य सु ख स्यै कं ति क स्य च ॥ २१ ॥
 टिका ॥ तरि स्ये औ से ॥ तु सा चि त्ति पै से ॥ पै ब्रह्म अन न से ॥ मी वा चु नि ॥ १ ॥ अ ग ब्रह्म या ना वा
 अ भि प्रा वो मी पां उ वा ॥ मी चि बो लि जे आ घ वा ॥ रा ही यि ही ॥ २ ॥ पै मे उ क आ णि चं द्र मा ॥ दो नि न
 के ति सु व र्मा ॥ तै सा म ज आ णि ब्रह्मा ॥ अ दु ना हि ॥ ३ ॥ अ ग नि स्य जे नि कं प ॥ अ ना ट त ध र्म स्त ॥ सु
 ख जे उ म प ॥ अ धि ति ये ॥ ४ ॥ वि वे क आ पु ले का म ॥ सा रू नि य कि जे धा म ॥ नि स्क र्की चे नि सी म ॥ किं व
 हु ना ते मी ॥ ५ ॥ औ से हो अ व धा रा ॥ तो अ न न्या चा सो यि रा ॥ सां ग त से वि रा ॥ पार्थो सि पै ॥ ६ ॥

येथधतराकृष्णे ॥ संजयाह तु ते कोणे ॥ पुसिलेनिवीणवायाणे ॥ काबोलसी ॥ ७ ॥ मासीअवसरि
 तफेडि ॥ विजयाचिसंगेगुठि ॥ येरखिवीक्षणेसांडि ॥ गोरीइया ॥ ८ ॥ संजयोविस्मयमानसि ॥ आहा
 करनिरसरसी ॥ खणेकैसयोदेवसि ॥ द्युयया ॥ ९ ॥ तह्निद्यपातुतोतुम्हो ॥ ययाविवकुहाघोये ॥ मो
 हाचापिये ॥ महोरोगु ॥ १० ॥ संजयाथैसचिंतिता ॥ सबादुतोसाभांकिता ॥ हरिखाचायेतुचिता ॥ म
 हापुर ॥ ११ ॥ खणौनिआतायेणे ॥ उद्याचनिअवतरणे ॥ श्रीछछाचेबोलणे ॥ सांगिलैल ॥ १२ ॥
 तयाअक्षरांतीलभावो ॥ पाववीनतुमचागवो ॥ आइकासुणेज्ञानदेवो ॥ निरतिचा ॥ १३ ॥ ॐ त
 स्मदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनियत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रे श्रीछछास्तुनसंवादेऽष्टमोऽध्यायः ॥ १४ ॥ सपूर्णमस्तु ॥ श्रीछछार्यणमस्तु ॥ श्लोक ॥ २७
 टिका ॥ ११३ ॥ येतुण ॥ ११० ॥ पत्रे ॥ २० ॥ ४५ ॥ ४५ ॥ ४५ ॥ ४५ ॥ ४५ ॥

